1. वाणिज्यिक बागानी कृषि (Commercial Plantation Agriculture)

बागानी कृषि एक विकसित कृषि प्रकार है। बागानी कृषि नवीन पद्धति पर आधारित है। इसमें नवीन यंत्रों का प्रयोग और संरचनात्मक उत्प्रेरक, कीटनाशक का प्रयोग होता है। ऐसे कृषि प्रकार की महत्वपूर्ण विशेषता निम्न है।

(i) यह औद्योगिक प्रबंध के नियमों पर आधारित होता है।

(ii) इसमें व्यापारिक कृषि फसल (रबर, कहवा, चाय, मसाले, नारियल) की खेती की जाती है। प्रमुख फसल एवं उत्पादन देश निम्नवत् है।

प्रमुख फसल	उत्पादक देश
(a) रबड़	थाईलैण्ड, मलेशिया, इन्डोनेशिया, भारत अफ्रीका के विषुवतीय क्षेत्र, मध्य अमेरिका, ब्राजील
(b) कहवा	ब्राजील, कोलंबिया, जमैका मध्य अमेरिका, दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका, भारत, दक्षिण पूर्वी एशिया।
(c) कोक	विषुवतीय अफ्रीका, दक्षिण पश्चिम अफ्रीका,

Scanned with CamScanner

चाय	दक्षिण एशिया, चीन, द० पू० एशि
	पूर्वी अफ्रीका देश
मसाले	भारत, श्रीलंका, मोजाबिक, केन्य
	हिन्द महासागर के द्वीपीय देश
नारियल	उष्णकटिबंध के तटवर्ती देश,
	फिलीपींस, भारत, श्रीलंका।
केला	मध्य अमेरिका, केनारी द्वीप,
	द० एशियाई प्रदेश।

(iii) सभी फसल निर्यात आधारित होते है। इनका निर्यात विश्व के देशों को किया जाता है।

(iv) बागानी कृषि मुख्यतः उष्णकटिबंधीय विकासशी देशों में होती है। जहाँ से विकासित देशों को निर्यात किया जाता है।

(v) जनसंख्या घनत्व कम होता है। यही कारण है कि वृहद कृषि क्षेत्र खाद्यान्न फसलों के लिए उपलब्ध होते है।

(vi) यह श्रम एवं पूँजी सघन कृषि है।

(vii) यह परिवहन साधनों से जुड़ा होता है।

(viii) उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ बगानी कृषि के अनुकूल है।

(M) सामूहिक कृषि (Collective Farming)

सामूहिक कृषि का अर्थ ऐसे जोत (Holdings) है जिसका स्वामित्व अनेक व्यक्तियो के पास होता है जिस पर समुदाय के सभी सदस्य मिलकर पूर्व योजना के अनुसार कार्य करते है। यह प्रणाली पूर्व सोवियत संघ द्वारा 1930 ई० में विकसित

Scanned with CamScanner

की गई थी। सम्प्रति रूस में तीन प्रकार के फार्म इकाइयाँ है :-

(i) सहकारी फार्म (kolkhoz)

(ii) राजकारी फार्म

(iii) निजी छोटे फार्म

चीन मे इस प्रकार की सहकारी कृषि फार्म को 'कम्यून' कहा जाता है। इन फार्मो सरकार की बिना किसी विशेष हस्तक्षेप नहीं हुआ करती। साइबेरिया और उत्तरी आस्ट्रेलिया जैसे क्षेत्रों में कई फार्म 4000 हेक्टेयर पर होते हैं। ऐसे इसका औसत आकार 3400 हेक्टेयर होता है। ऐसे फार्मो पर निजी स्तर से गाय, सुअर, मुर्गी पालन के साथ-साथ फल एवं सब्जियाँ उगाई जाती है। ऐसे फार्मों मे 500 से भी अधिक श्रमिक कार्यरत होते है। प्रत्येक फार्म मे सामुदायिक भवन, कार्यालय, कैन्टीन, मीटिंग का कमरा, स्कूल, पुस्तकालय इत्यादि होते है।

V) राज्य पोषित फार्मिंग / कृषि (State Aided Farming) :-

इस प्रकार की कृषि को पूर्व सोवियत संघ मे सावखोज (Sovkhoz) कहा जाता था। यह विस्तृत कृषि क्षेत्र होता है। इसमे अत्याधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग होता है। इसमे कार्यरत श्रमिको को सभी सुविधाएँ सरकार द्वारा दी जाती है। आज यह कृषि औद्योगिक रूप लेता जा रहा है।

Scanned with CamScanner

वर्तमान समय में कृषि फार्म टूट रहे हैं लेकिन इस प्रकार की कृषि से साइबेरिया के आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों में भी व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

निष्कर्ष (conclusion) :-

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है प्रत्येक कृषि प्रकार की अपनी विशेषताएँ और इन्हीं विशेषता की वजह से कृषि प्रादेशिकीकरण से अलग किया जाता है सभी प्रकार में पर्याप्त विविधता है।

इस संदर्भ में व्हिटलसी का कृषि प्रकार ज्यादा प्रमाणिक लगता है आज के संदर्भ में भूगोलवेत्ता इन सिद्धांत को आधार रूप में प्रयुक्त उसमें संशोधन कर अपना मत प्रस्तुत कर रहे हैं।